ई ॐ श्रीः

पूर्व-

" वेदविद्या की प्राणप्रतिष्ठा पीठिका

(मङ्गलमन्त्रः प्रथमः॥

" ॐ भद्रं नो अपि वातय मनः ॥

इन्द्रो विमदः ऋषिः ऋक् मं १०। (१)

वेद प्राणप्रतिष्ठायां त्रिकङ् मन्त्रः ॥ द्वितीयः। अध्यायान्ते मण्डलान्ते च पठनीयः॥

" ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः ॥

यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत् तद् विदुस्त इमे समासते ॥

॥ तृतीयो मन्त्रः ॥ (दीर्घतमाः ऋषिः॥ ऋक् मं॰ १।१६४।३९)

" प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम् ॥

यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा देवा ओकांसि चक्रिरे ॥

॥ वेद के सात प्रधान नामधेय

(५) श्लोकः, (६) वाक्,

(१) वेदः, (२) ब्रह्म, (३) छन्दः, (४) मन्त्रः, (५) श्रुतिः ॥

इति - दैवरातः

॥ इति वेदविद्या प्राणप्रतिष्ठा ॥

पूर्व पीठिका

~~पीठिका~~

ॐ श्रीः

॥ भद्रं नो अपि वातय मनः ॥

" ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः ॥
यस्तं न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ॥
(ऋषिः दीर्घतमाः (ऋक् मं. १।१६४।३९)

वैदिकविद्याकी शिक्षाके लिए उसके अभ्यासके विषयोंकी अवस्था पत्रिका ॥

(१) वेदोंका परिचय ॥ प्रथमा कल्प... पूर्व अध्याय कल्प —

॥ इसमें आठ विषयोंके आठ कल्प हैं ॥(८) (पीठिका)

१- वेदोंका स्वरूप तत्त्व – " ज्ञान, ज्ञेय, ज्ञाता, चेतना, सत्ता, प्राप्य फल ये वेदके वस्तुरूप हैं, और जानने वाली चेतनारूप वाणी, तथा जनानेवाली वाचक शक्तिरूप वाक् भी वेद शब्दका अर्थ है ॥
यह शास्त्ररूप वेद ही सभी विद्याओंका आश्रय है, सभी अर्थोंका प्रकाशक है, सर्वज्ञकल्प है, और प्रत्यक्ष प्रमाण भी है,

२- वेदोंका ~~नि~~ अस्तित्व – और सत्यत्व, ॥

३- वेदोंका – अनादित्व, अनन्तत्व, नामावशेषत्व और नित्यसिद्धत्व ॥

४ वेदोंका प्रादुर्भाव – वाक् और विज्ञानके योगसे आदिसृष्टिमें परमपुरुषके सर्वहुत् यज्ञसे हुआ है ॥

५ वेदोंका दर्शन – ऋषियोंके यज्ञसे और योगरूप तपस्यासे समाधिमें दिव्य आन्तर्य दृष्टिसे मन्त्रोंका श्रावण – और दर्शन,

६- वेदोंका अपौरुषेयत्व – अकृतकत्व और अकृत्रिमता ॥

७- वेदोंका वैशिष्ट्य और महत्त्व, अनन्यसाधारण स्वतःसिद्धसत्ता।

८ वेदोंकी उपयोगिता और प्रयोजनता, – वेदोंमें निर्दिष्ट – फलोंको अनुभवसे पानेके लिए वैदिक यज्ञादिकर्मों में – उपासनाओंमें ज्ञानमें, और आहार विहारादि लौकिक शारीरक = व्यवहारमें भी प्रत्यक्ष प्रक्रियासे वेदमन्त्रोंका प्रयोग, यह आहारादि सभी विषयोंको यज्ञरूप बनानेके लिए विहित है।

॥ इति प्रथम पर्यायकल्प आठ अङ्गोंसे नियत है, ॥

इति देवरातः

पीठिका

(३)

पूर्व

(१) ॥ दूसरी कला षोडशाङ्कुरा ॥ (पूर्व पीठिका)

(१) तत्व

१- (१) वेदों के स्वरूप-(वस्तु तत्व) —

(वस्तु तत्व)

"विद्- ज्ञाने" इस धातु के अर्थ से- वेदः वेत्ता सर्वज्ञ आत्मा पुरुष परब्रह्म वस्तु है,

२ (२) वेदात्मा वाच्यकशक्ति रूपिणी वाणी।

चेतना- संविदात्मा चेतयन्ती- संविदात्मा - वेत्री-वेदयित्री वाक्-)

ऋग्वेदादि शास्त्ररूपा, सर्वार्थप्रकाशन समर्था सर्वज्ञकल्पा ॥

(२) वेदका २. अस्तित्व और सत्यत्व" (वस्तु तत्व)

३ (१) वेद स्वरूप विज्ञान और ज्ञाताको अस्तित्व- और सत्यत्व,

२ (वस्तु तत्व) और लक्ष्य-

४ (२) वेदरूप वाणीका अस्तित्व तथा सत्यत्व,

(३) वेदका- २ अनादित्व- अनन्तत्व" तत्व,

५ (१) ज्ञातृरूप सर्वज्ञ वेदपुरुषका अनादित्व और अनन्तत्व वगैरह २

(अनादिनिधनता - २)

६ (२) वाग्रूप वेदका अनादित्व- अनंतत्वादि ॥ अनादिनिधनता -

(४) वेदोंका २ प्रादुर्भाव (वस्तुतत्व)

७ -१ चेतनात्म वेदपुरुषका प्रादुर्भाव| सर्वद्रष्टासे

२ (प्रादुर्भाव वस्तु तत्व)

८ (२) सर्वद्रष्टासे ऋगादि वेद वाणीका प्रादुर्भाव। तस्मात्प्रकार

(५) वेदोंका दर्शन २

९ (१) ऋषियों से सर्वज्ञ वेदपुरुषका दर्शन- साक्षात्कार।

२

१० (२) समाधिमें ऋषियोंको वेदरूप वाणीका मंत्रदर्शन, और श्रवण ॥

(६) वेदोंका २ अपौरुषेयत्व-)

११ (१) सर्वज्ञपुरुषके प्रादुर्भावमें अपौरुषेयत्व, अकृतकत्व,

२

१२ (२) वेदवाणीका अपौरुषेयत्व- अकृत्रिमता।

(७) वेदों २ का वैशिष्ट्य-

१३ (१) ज्ञातृरूप वेदात्माका वैशिष्ट्य- और महत्व,

२

१४ (२) वेदरूपवाणीका वैशिष्ट्य- तथा महत्व।

(८) २ वेदोंकी उपयोगिता-

१५ (१) ज्ञातृरूप सर्वज्ञ वेदपुरुषकी उपयोगिता-

१६ (२) वेदमंत्रोंका प्रयोग- कर्म- उपासना- ज्ञान वगैरह वैदिक तथा आहारादि लौकिक व्यवहारोंमें भी वेदमन्त्रोंका प्रयोग और प्रयोजन,

(१६ अंकुरा)- (विराम) द्वितीयपीठिका- इति दैवरातः

(१) ॥ ई ॐ श्रीः ॥

ॐ भद्रं नो अपि वातय मनः ॥

" ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः ॥
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत् तद् विदुस्त इमे समासते ॥
(दीर्घतमा ऋषिः ॥ ऋक्. मं. १।१६४।३९)

॥ वैदिक विद्या की शिक्षा के लिए उसके अभ्यासके विषयों की
॥ अवस्था पत्रिका ॥

(विवरणो-

(१॥ पहिली कला-(१)- अष्टाङ्गमूला (~~पीठिका~~) (उपव्याख्या

(॥ वेदों का परिचय ॥ (१)

॥ इसमें आठ विषयों के आठ कलमें हैं ॥

(१) वेदों का- वस्तुसिद्ध स्वरूप तत्व ॥ ॥

॥ इसमें भी हरएक विषयमें " वस्तु- वाणी- विज्ञान "
॥ ऐसे तीन विभाग हैं ॥

(१) वस्तुविषयका विभाग पहिला ॥

(१) वेत्ता, (२) वेद्य, (३) वेदना-(ज्ञान) (४) सत्ता, (५) प्राप्य, (फल

(६) वेदयिता-(प्रापयिता) (७) चेतना - (८) चेत्ता तथा चेतयिता

ये ऐसे वेदके वस्तु स्वरूप हैं ॥

(२) वस्तुरूप वेदात्माकी वाचक शक्तिरूप वाणीका स्वरूप

(१) " संविदाना वाक्, (२) चेतना . (३) वेदयित्री- ज्ञापयित्री- बोधयित्री

अर्थात् स्वयं जाननेवाली, तथा जनानेवाली वाचक शक्तिरूप वाणी

" वेद शब्दका अर्थ है, यही ऋग्वेदादि शब्द शास्त्ररूप वाणीका स्व

अत्र- ज्ञाता-ज्ञेय-ज्ञान
इसीसे सम्बद्ध और एक तीसरा तत्त्व है - ज्ञान तथा विज्ञान, इन तीनों
योगसे ही त्रिगुणीकरणरूप - त्रिपुटीके स्वरूपसे वह एकही वेद स्वतः सि

(२) " वेदोंका अस्तित्व (सत्ता) और सत्यत्व-माने - +
+ त्रिकालाबाधितत्व- तथा विकारपरिणामादि राहित्य, "

यह भी "वस्तु-वाणी-विज्ञान" इन तीनोंके त्रिपुटीके योगसे ही और लेना आवश्यक है,

(३) + वेदोंका अनादित्व और अनन्तत्व, तथा नित्यसिद्धत्व, ~~अथवा~~ (नामाविशेषता)

यहांभी- वस्तु-वाणी-विज्ञान "इन त्रिपुटीका योग उचित है,

(४) ++ (वेदोंका प्रादुर्भाव -) - तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानिजज्ञिरे"।

वाक् और विज्ञानके योगसे ही आदिसृष्टिमें परमपुरुषके सर्वहुद्-यज्ञसे वेदोंका आविर्भाव हुआ है,

उस सर्वहुद् यज्ञका स्वरूप-निर्वचन,

"प्रतिष्ठाप"

(५) + वेदोंका दर्शन - "यज्ञेन वाचः पदवीयमायन् तामन्वविन्दन् ऋषिषु" -

प्राचीन ऋषियोंके यज्ञसे योगरूप तपस्यासे समाधिदशामें अन्तर्दृष्टिसे ~~उन उन स्वय~~ उन स्वतःसिद्ध दिव्य मन्त्रोंका दर्शन और श्रवण, यहांभी "वस्तु-वाणी और विज्ञानका त्रिपुटीकायोग है,

(६) + [वेदोंका अपौरुषेयत्व - अकृतकत्व- और अकृत्रिमता]।

वेदात्मक वस्तु, उसकी वाचकशक्तिरूप वाणी, और उसका विज्ञान ये तीनोंभी अपौरुषेय और अकृतक ही हैं,

(७) + [वेदोंका वैशिष्ट्य और महत्त्व, वह अनन्यसाधारण स्वतःसिद्धसत्त्व,] छन्दस्तत्त्व, मन्त्ररूप नाम की स्वतंत्र सामर्थ्य, और आत्मसात करणयोगशक्ति, तथा दृष्टान्ताभाव: ||

(८) ॥ वेदोंकी उपयोगिता और प्रयोग तथा प्रयोजन, ॥

+

वेदों में निर्दिष्ट फलोंको अनुभवसे प्रत्यक्ष पानेके लिए वैदिक यज्ञादि कर्मोंमें, और उपासनाओं में तथा ज्ञानमें भी वेदमंत्रोंका प्रयोग, और उसकी विधि साक्षात् प्रक्रियाओंका निर्वचन,

उसी तरह आहार विहार वगैरह ~~लौकिक~~ शारीरिक वाचिक और मानसिकरूप लौकिक व्यवहारोंमें भी, तथा सामाजिक प्रापञ्चिकोंमें भी प्रत्यक्ष प्रक्रियासे वेदमंत्रोंका प्रयोग विधि,

इन आहार विहार वगैरह सभी विषयों को शास्त्रीयदृष्टिसे और वैदिक कृतिसे यज्ञरूप बनानेके लिए ही वेदसे विहित है।

यह वेदकी सक्त आज्ञा है, उल्लङ्घनीय है। + नहीं भूलना नहीं चूकना भूलनेमें

इस प्रकार यह प्रथमकला आठ अंगोके योगसे पूर्ण है

इति प्रथमाकला सम्पूर्णा

:+

इति – देवरातः

नम्र विशेषनिवेदन–

यहां इन सभी विषयोंमें पूर्वोक्त – वस्तु – वाक् – और विज्ञान" इस त्रिपुटीके योगका अनुसन्धान रखना यही मेरी सूचना है।

॥इति प्रथमा कला अष्टाङ्ग मूला – ~~पीठिका~~ – उपत्यारस्थानम्

अत्र सर्वत्रापि "ज्ञातृ – ज्ञेय – ज्ञानानाम् – वस्तु – वाग् विज्ञानानांच" तेषां त्रिपुटीनां सह योगेन अनुसन्धानम् आवश्यकम्॥

इति प्रथमा कला – अष्टाङ्ग मूला – पीठिका।

१ (४)

(३) ॥ तिसरी कला (३२) द्वात्रिंशत् पद शाखा सञ्चरा ॥ पीठिका

(१) ऋग्वेद संहिता

१ "ऋग्वेद संहिता - प्रारम्भ, "अग्निमीळे पुरोहितम्"-

(१) "शाकल शाखा" मण्डलानुक्रम, अनुवाक, सूक्त, ऋचा।

(२) "बाष्कल शाखा - अष्टकानुक्रम - अध्याय - वर्ग - मंत्र

(२) यजुर्वेद संहिता ॥

२ कृष्णयजुर्वेद संहिता. प्रारम्भः, "इषे त्वोर्जे त्वा,

१ तैत्तिरिय शाखा - सारस्वपाठ,

२ मैत्रायणी शाखा - "इषे त्वोर्जे त्वा,

३ कठ शाखा - "इषे त्वोर्जे त्वा,

(४) कपिष्ठल कठ शाखा - "इषे त्वोर्जे त्वा,

३ मूल यजुर्वेद संहिता - "इषे त्वोर्जे त्वा,

कार्त्तिकेय - पञ्चकाण्ड संहिता.

(३) शुक्लयजुर्वेद संहिता.

४ शुक्लयजुर्वेद संहिता - प्रारंभ "इषे त्वोर्जे त्वा,

(१) वाजसनीय शाखा - ४० अध्याय "

(२) माध्यन्दिनीय शाखा - ४० अध्याय "

(३) काण्व शाखा - ४० अध्याय "

(४) सामवेदसंहिता-

५ सामवेदसंहिता- प्रारंभ, "अग्न आयाहि वीतये"

(१) कौथुमी शाखा- "

(२) राणायनी शाखा-

(३) जैमिनी- शाखा-

[illegible]वेदोल्लिखिताः समग्राः मंत्राः १८७५
ऋग्वेदान्तर्गताः १७७४
सामवेदोल्लिखिताः ऋङ्.
[illegible] आग्रामाः अरण्ये ऋङ्.मंत्राः ९९ —

पूर्वार्चिक - उत्तरार्चिक॥ ग्रामे गेय - अरण्ये गेय॥

सामगानयुक्ता - ऋङ्मन्त्रा

(५) अथर्ववेदसंहिता-

(६) अथर्ववेदसंहिता-

(१) शौनक शाखा- प्रारम्भ, "शंनो देवी रभिष्टये

(२) पिप्पलाद शाखा प्रारंभ- "ये त्रिषप्ताः परियन्ति"

(मन्त्र ब्राह्मणयो र्वेदनामधेयम्)

(५) ऋग्वेद ब्राह्मण-

७ ऋग्वेद ब्राह्मण- केवल गद्यरूप-

(१) ऐतरेय ब्राह्मण- प्रारम्भ- "अग्निर्वै देवानामवमो विष्णुः (परमः,

(२) शाङ्खायन ब्राह्मण-

(३) कौषीतकि ब्राह्मणोपनिषत्

२ ऐतरेय आरण्यक-
३ ऐतरेय- उपनिषत्
४ ब्राह्मण- उपनिषत्

(६) कृष्णयजुर्वेद ब्राह्मण

८ कृष्णयजुर्वेद (तैत्तिरीय ब्राह्मण-) "उद्धन्यमानमस्या अमेध्यम्।

(१) तैत्तिरीय ब्राह्मण- "

(२) मैत्रायणी ब्राह्मण

(३) काठक - ब्राह्मण-

(९) काण्डिकेय मूलयजुर्वेद ब्राह्मण-

(९) मूलयजुर्वेदब्राह्मण- प्रारंभ "उद्धन्यमानमस्या अमेध्यम"

२ अनुब्राह्मण सहित- -पंचकाण्डात्मक-

२

(१०) शुक्लयजुर्वेद ब्राह्मण-

(१०) शतपथ ब्राह्मण प्रारम्भः " व्रतमुपैष्यन्०-

२

ब्राह्मण- आरण्यक- उपनिषद्- सहित-

ईशावास्योपनिषत्

"ईशावास्यमिदं सर्वम्" मन्त्रोपनिषत्। (वेदोपनिषत्)

२

"

२

१०

(११) सामवेदब्राह्मण-

२

(१)

(११) सामवेद- तांड्य ब्राह्मण-

(२) तांड्य वगैरह आठ ब्राह्मण हैं

(३) छान्दोग्योपनिषत्

२

११

(१२) अथर्व वेद ब्राह्मण-

२

(१२) उपनिषत्- (१) केनोपनिषत् (तवलकारोपनिषत् (२) प्रश्नोपनिषत्

(३) मुण्डकोपनिषत् (४) माण्डूक्योपनिषत्, (५) गणसर्थर्व-शीर्षोपनिषत्-

२

(१३) वेदोपनिषत् "

२

१३ वेदोपनिषत्- "एवा वेदोपनिषत्" वै "शिक्षोपनिषत्"

" वेद मन्त्र- और उपनिषत्" इन दोनों का योग- ईशावास्योपनिषत्"

शुक्लयजुः संहिता अ० ४० - बृहदारण्यकोपनिषत्- (        )

श्वेताश्वतर मन्त्रोपनिषत्।"

२

४

" शिक्षा कल्प वगैरह छः ६ वेदाङ्ग ॥

(१३) (१) शिक्षा वेदाङ्ग पहिला ॥

(१)

१४ वेदाङ्ग शिक्षा, पाणिनिकी है, प्रारम्भ " अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयं मतं यथा"

उपनिषत् में - मूलतः शिक्षा "शीक्षां व्याख्यास्यामः। वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्।

साम सन्तानः। इत्युक्तः शीक्षाध्यायः॥ तै. शिक्षोपनिषत्॥ (१।१।१)

(१४) कल्पः -

(२)

१५ कल्पः - कल्पसूत्र, - १ श्रौतकल्प. (२) स्मार्तकल्प. -

१ श्रौतसूत्र - गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र,

(१) ऋग्वेद आश्वलायन श्रौतसूत्र, ~~आश्वलायन गृह्यसूत्र, आ. गृह्यपरिशिष्ट~~

(२) कृष्णयजुर्वेद - (१) बौधायन श्रौतसूत्र, (२) बौधायन गृह्यसूत्र. (३) बौ. धर्मसूत्र,

(३) (१) आपस्तम्ब श्रौतसूत्र, (२) आपस्तम्ब गृह्यसूत्र, (३) आपस्तम्ब धर्मसूत्र,

(४) हिरण्यकेशी - (१) सत्याषाढ श्रौतसूत्र, (२) सत्याषाढ गृह्यसूत्र

(५) शुक्लयजुर्वेद - (१) कात्यायन श्रौतसूत्र,

(६) सामवेद (१) साम श्रौतसूत्र, (२) साम गृह्यसूत्र.

(७) अथर्व - (१) गृह्यसूत्र -

(१५) व्याकरण

(३)
१६- व्याकरण- अष्टाध्यायी सूत्र, "वृद्धिरादैच्, अदेङ् गुणः, इको गुणवृद्धी"
२

प्रातिशाख्यम्- ऋक्- कृ-यजुः, शुक्ल यजुः, साम, अथर्ववेद प्रातिशाख्य-
२.

२

(४) (१६) निरुक्तम्
१७- निरुक्तम्- निघण्टु कोष भाष्य, | "गौः ग्मा क्ष्मा, क्षमा० -
यास्काचार्य की है।

(५) (१७) छन्दः-
१८ छन्दः- प्रारंभ मयरसतजभनलग सम्मितम्
पिङ्गलनागः - कर्ता - "छन्दः। गायत्री। दैव्येकम्।" इत्यादि सूत्र,
२

(६) (१८) ज्यौतिष-
१९ ज्यौतिष- प्रारम्भ "पञ्चसंवत्सरमयं युगाध्यक्षं प्रजापतिम्॥"
१ आर्च ज्यौतिष (२) याजुष ज्यौतिष-

दिन ऋतु अयन- मास- पक्ष संवत्सर वगैरह कालका उपदेश।
२

(२०) परा विद्या ॥

२० **परा विद्या** - "अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते" मुंडकोपनिषद् १।१।५)

**ब्रह्म वस्तु- तत्त्व विज्ञान विद्या ॥ ब्रह्मविद्या- अध्यात्मविद्या ॥**

(२१) वेदोंके ६ उपाङ्ग षड्दर्शन शास्त्र ॥

(जै. सूत्र.)

२१ (१) धर्ममीमांसा शास्त्र- प्रारम्भ- "अथातो धर्मजिज्ञासा" (१.१.१)
यह जैमिनि आचार्यका विरचित है.
बारह अध्याय (१२) अधिकरण- एक हजार १००० ॥ पाद- ४८, सूत्र.

वैदिक यज्ञादि धर्म विषयोंकी चर्चा, विमर्शन और निर्णय, सप्रमाण-
वेद शास्त्रादि प्रमाणों से मीमांसा ॥

(२२) ब्रह्ममीमांसा शास्त्र ॥

२२ **(२) ब्रह्ममीमांसा शास्त्र- प्रारंभ**- "अथातो ब्रह्मजिज्ञासा (ब्र.सू.१.१.१)
यह (व्यास) बादरायण आचार्यका विरचित है, ४-४ पादोंके ४ अध्याय है
ब्रह्म वस्तु तत्त्व का ज्ञान और विज्ञानोंका साधन और फलोंका उपदेश,
वेद और उपनिषदों तथा गीतास्मृतिके प्रमाणवचनोंसे चर्चा- विमर्शन. निर्णय है।

(२३) योगदर्शन शास्त्र ॥

२३ (३) योगदर्शन शास्त्र - प्रारम्भ- "अथ योगानुशासनम्" यो.सू.१.१.१)
यह पतञ्जलिमुनिका विरचित है. १ अध्याय एक. ४ पाद चार, है.
साधन- चित्तवृत्तिनिरोध, ईश्वरप्रणिधान, अष्टाङ्ग योग, धारणाध्यानसमाधि-
संयमयोग. (फलपाद) सम्प्रज्ञात समाधि- असम्प्रज्ञात समाधि है.

(२४) साङ्ख्य दर्शन शास्त्र ॥

२४ **(४) सांख्य** दर्शन शास्त्र प्रारंभ. कपिलसू.
यह कपिल मुनिका विरचित है. सांख्यकारिका आर्यावृत्तके श्लोकबद्ध
इसके प्रकृति-पुरुष- त्रिगुण समर्थन. मोक्ष.

(२४) वैशेषिकदर्शन-शास्त्र (५१.१)

२५ (५) वैशेषिक दर्शन शास्त्र प्रारम्भ "अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः" वै.सू.
यह कणादमुनिका विरचित है। यह सप्तपदार्थवादी है, सभी अर्थ विचारके
शास्त्रों में उपकारक है। "काणादं पाणिनीयं च सर्वशास्त्रोपकारकम्-
इसमें- अध्याय( ) पाद( ) सूत्र( ) हैं,

(२५) न्यायदर्शन शास्त्र

२६ (६) न्यायदर्शन- गौतमसूत्र प्रारम्भ, "प्रमाणप्रमेय॰
~~यह षोडश~~ यह षोडश पदार्थवादी है, गौतमऋषिका बनाया हुआ है।
इसमें- अध्याय ( ) पाद ( ) सूत्र- ( ) हैं,

(७) सिद्धान्तदर्शन-
सिद्धान्त दर्शन प्रारम्भ- "सर्वत्र अनाश्वासः"
यह इन दर्शनशास्त्रोंमें ही अन्तर्गत माना गया है।

(२६) धर्मशास्त्र-

(धर्मशास्त्र)
२७ यह स्मृतिग्रन्थ है- श्रुतिके बाद दूसरा स्थान इसीका है,
"श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः" (मनुस्मृ. )
यह मनु याज्ञवल्क्यादि मतोंके अनुसार २०-२४-२८ स्मृतियाँ हैं,
इनमें वेदप्रमाणके अनुसार उपनयनादि संस्कार, और वर्णाश्रमादि धर्म भी समर्थित
इस धर्मशास्त्रकी परिगणना १४ चौदह विद्याओंके अन्दर है,
"पुराणन्यायमीमांसा धर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः। वेदाः स्थानानि विद्यानां-
धर्मस्य च चतुर्दश" -(या. स्मृ. ) पुराण वगैरह चार ग्रन्थ. ६ वेदांग
और ४ वेद, मिलके १४ विद्या होती हैं,

७

(२७) (~~...~~) चारों वेदों के- उपवेद -)

(१) (१) ऋग्वेद का "आयुर्वेद" उपदेव है।"

२८ आयुर्वेद -

इसमें चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांगहृदय ये तीन प्रधान ग्रंथ हैं
इनके कर्ता - चरकाचार्य - सुश्रुताचार्य - वाग्भट - ये हैं

इसका मूल ऋग्वेद में ही है, नैसर्गिक - चिकित्सा - वनस्पति चिकित्सा,

मान्त्रिक चिकित्सा यज्ञादि प्रक्रिया चिकित्सा वगैरह,

(२८) धनुर्वेद -

२९ (२) धनुर्वेद यजुर्वेद का उपवेद है, "धनुर्विद्या नाम से प्रसिद्ध है,
यह क्षत्रियों के लिए प्रधान है, और विश्वविजय का प्रधान ~~प्र~~ साधन है,
जिस विद्या को परशुराम ने दत्तात्रेय से प्राप्त किया था, परशुराम से भीष्म द्रोण
और कर्ण ने पाई थी। भीष्म - और द्रोणाचार्यों से नरवीर सव्यसाची अर्जुन ने
प्राप्त की थी, जिसके योग से - महाभारत के युद्ध में विजय मिली थी -
श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण जीने विश्वामित्र से धनुर्विद्या सिखी थी - जिससे
शिवधनु के नाम से सीता को ~~...~~ पाई थी, ~~...~~ परशुराम के साथ धर्षण से
विजयी बनकर "रामः शस्त्रभृतां वरः" ऐसी पदवी पाई थी, बाद दशमुख
रावण की विजय से रामराज्य की स्थापना की थी।

(२९) गान्धर्व वेद -

३० (३) सामवेद का गान्धर्व वेद उपवेद है, जिसमें साम गान का विधान है,
वस्तुतः मूलतः यह ऋग्वेद से ही सम्बद्ध है। उस से सात स्वरों से सात प्रकार के
सामगानों में विहित है; "शाक्कर रैवत वगैरह
नारद सूत्र भी साम-गान और इतर लौकिक संगीत के बारे में है।

## (३०) आगम-तन्त्र शास्त्र-

३१ (४) अथर्व वेदका उपवेद- आगम-और तन्त्रशास्त्रकेनामसे प्रसिद्ध है। उसमें वैखानस आगम, पञ्चरात्रागम-शैवागम, रुद्रयामल, शाक्तागम, ऐसे अनेक ग्रंथ हैं, उनमें देवताओंकी प्रतिष्ठा- उनकी प्राणप्रतिष्ठा, पूजाविधि नवाह्न महोत्सवविधि, होमविधि, वगैरह आराधना की प्रक्रिया बताई गई है।

उसीतरह तन्त्रशास्त्रमें मेरुतन्त्र, दुर्गातन्त्र, नागकेश्वर तन्त्र, ज्ञानार्णवतंत्र, शिव ताण्डवतन्त्र, भैरवतन्त्र, शाक्त तंत्र, वगैरह अनेक ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

उनमें "गाणपत्य, सौर- वैष्णव, शैव, शाक्त" इन पांच देवताओंके प्राधान्यसे उन देवताओंके मंत्र- यन्त्र, और तंत्रोंका समर्थन किया गया है और उन मंत्रोंको ऋषि छन्द देवता, और न्यास वगैरह भी बताया गया है।

## (३१- इतिहास-पुराण ॥

(१)

३२ इतिहास- पुराण यह- आम्नाय प्रमाण है।
"इतिहास पुराणाभ्यां वेदं समुप बृंहयेत्" इतिहास और पुराणों से वेदको अच्छे तरह से बढाना, वैदिक तत्त्वज्ञानको सुवीर्य बनाना।

"इतिहास" इसका अर्थ "इति ह आस" ऐसा था, रे. इस प्रकार से था ऐसे सुनतेमें आया है। ~~ऐसे परोक्षार्थमें~~ प्राचीन विषयोंको बताने के लिए इसका प्रयोग किया गया है जैसे कि "महाभारत" उसमें १८ पर्व हैं। ~~१००००००~~ एक लाख श्लोक हैं। यह व्यासजीका बनाया हुआ है,

(२ पुराण)

२ पुराण- यह भी एक प्रमाण ग्रन्थ है, यह भी वेदोंको पुष्टिक है, इसमें १८ पुराण। १८ उपपुराण भी हैं, "मुख्यपुराण। स्कन्द। अग्नि, वायु, सूर्य, ब्रह्मवैवर्त- मार्कण्डेय-पुराण वगैरह नामों से प्रसिद्ध हैं:-
इन सबों का मूल वेद ही है।

इति तिसरी कक्षा (पीठिका) द्वात्रिंशत पदसञ्चया समाप्ता ॥

दैवरातः